दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

(Hindi Literature)

Mentorship Program
Mukherjee Nagar

टेस्ट–9
(प्रथम प्रश्न-पत्र)

DTVF / OPT-23 **HL-2309**

निर्धारित समय: तीन घंटे	अधिकतम अंक : 250
Time Allowed: Three Hours	Maximum Marks : 250

नाम (Name): Praduman Kumar

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.): [redacted]

ई-मेल पता (E-mail address): [redacted]

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 18/08/2023

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

0	8	1	1	4	9	2

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***
*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*
*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________ टिप्पणी (Remarks): ____________

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

Feedback

1. Context Competency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) राष्ट्रभाषा और राजभाषा का अंतर

भारत में हिन्दी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। इसलिए इसे राष्ट्रभाषा माना जाता है वहीं देवनागरी लिपि, हिन्दी भाषा व अंग्रेजी राजभाषा है।

राष्ट्रभाषा	राजभाषा
* जनता द्वारा आम बोल चाल की भाषा होती है	* राजकीय कार्यों में उपयोग होने वाली भाषा है
* अनौपचारिक शब्दावली होती है	* औपचारिक शब्दावली होती है
* यह विदेशी नहीं हो सकती है	* यह विदेशी हो सकती है जैसे मुगल काल में फारसी थी।
* इसमें परिवर्तन होने में लम्बा समय लगता है	* राजकीय आदेश द्वारा बदल दी जाती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

यह व्याकरणशास्त्रीय तथा मानकीकृत होती है।	वस्तुनिष्ठ होती है
(*) अधिकांश जनता द्वारा बोली जाने वाली भाषा को कहते हैं	राजकीय कार्यों व कार्यालयों में प्रयुक्त प्रयोग होने वाली होती है

राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा अलग-2 भी हो सकती है जैसे औपनिवेशिक काल में अंग्रेजी राजभाषा हिन्दी राष्ट्रभाषा थी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' तथा 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा' का योगदान

नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना 1893 में हिन्दी के विकास एवं प्रसार के लिये हुई थी जिसके संस्थापक श्यामसुंदर दास जी थे।

(*) नागरी प्रचारिणी सभा ने हिन्दी के विकास के लिए सभाओं एवं सम्मेलन को माध्यम बनाया।

(*) पारिभाषिक शब्दावली का विकास करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका है।

(*) हिन्दी साहित्य सम्मेलन के साथ मिलकर बढ़ावा दिया।

(*) 100 वर्षों से अधिक का समय हिन्दी के विकास को समर्पित है।

वहीं दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना गांधी जी के

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सहयोग से 1927 में हुई थी।
इंदौर अधिवेशन में 1918 में गांधी जी ने दक्षिण में प्रचार की योजना बनाई अपने पुत्र देवदास को भेजा था।

* इसने दक्षिण में हिन्दी के प्रचार प्रसार को बढ़ाया।
* हिन्दी को दक्षिण भारतीय राज्यों के लोगों को सिखाया।
* अनेक सम्मेलनों के माध्यमों से हिंदी का प्रचार किया।

इस प्रकार काशी प्रचारिणी सभा एवं दक्षिणी भारत हिन्दी प्रचार समिति का सराहनीय योगदान रहा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) नाथ साहित्य में खड़ी बोली हिन्दी का प्रारंभिक स्वरूप

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

नाथों ने अपनी मान्यताओं का प्रचार करने के लिए जो बाना साहित्य रचा उसे नाथ साहित्य कहते हैं नाथों की संख्या 9 मानी गयी है, इनके प्रवर्तक गोरखनाथ जी थे।

नाथों की भाषा विभिन्न बोलियों के संयोग से निर्मित हुई है जिसमें खड़ीबोली भी दिखती है

चर्पटीनाथ का निम्न दोहा -

"जाणि के अजाणि होय बात तू ले पछाणि
चेले हो इसा लाभ होयेगा, गुरु होइयों हाणि"

न के स्थान पर "ण" का प्रयोग खड़ी बोली की प्रवृत्ति को धारण करता है।

गोरखनाथ जी द्वारा लिखे गये कुछ दोहों में तो

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

साफ झलक दिखती है कि खड़ीबोली है।

"लौ लारव पातरी आगे नाचे
पीछे सहज अखाड़ा
ऐसे मन ले जोगी खेले
तब अंतरी बसे कण्डारा"

उपर्युक्त दोहे में औकारान्त, अकारान्त प्रवृत्ति खड़ीबोली को हाल्लेगत करती है। अतः आधुनिक खड़ीबोली में नाथों की ~~खाव~~ साहित्य की गहरी प्रेरणा विद्यमान रही है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) बघेली बोली

बघेली पूर्वी उपभाषा की बोली है जिसका क्षेत्र मध्यप्रदेश के पूर्वी भाग, रीवा का है। जो अवधी से भी समतुल्यता रखती है। छत्तीसगढ़ी भाषा इसके समान ही लगती है।

- व के स्थान पर 'ब' का प्रयोग किया जाता है।
  आवा > आबा
- प्रायः उकारान्त बोली होती है।
- तोहरा तथा ओकरा जैसे सर्वनामों के प्रयोग किये जाते हैं।
- संज्ञा के तीनों रूप मिलते हैं जैसे लरिका, लरिकऊ, लरिकऊना
- विशेषण प्रायः अकारान्त होते हैं।
  हीत बिलैया, हीत बैल

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(*) स्त्रीलिंग बनाते समय ई या इन का प्रयोग होता है

बघेली पूर्वी उपभाषा की प्रसिद्ध बोली है तथा व्याकरणिक एवं शाब्दिक स्तर पर छत्तीसगढ़ी एवं अवधी के नजदीक है हालांकि ग्रियर्सन ने इसे स्वतंत्र बोली माना है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) 'कुमाऊँनी' बोली

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कुमाऊँनी पहाड़ी भाषा की बोली है जो प्रायः गढ़वाली, कुमाऊँनी ~~खस्कुरी~~ के रूप में जानी जाती है इसका क्षेत्र उत्तराखण्ड, हिमाचल के पहाड़ी क्षेत्र होते है

यह पहाड़ी उपभाषा की प्रसिद्ध बोली है जिसमें निम्न विशेषताएं दृष्टिगत होती है

(*) कुमाऊँनी प्रायः ट बहुला भाषा है

(*) ओकारान्त, अकारान्त प्रधानी होती है

(*) महाप्राणीकरण की विशेषता पायी जाती है

(*) न व ण का आपस में मिल जाना इसकी मुख्य विशेषता है
जल, जण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

* सर्वनामों में तोहरो, तुहरा जैसे प्रयोग मिलते हैं।
* साथ ही संधीभीकरण की प्रवृत्ति देखने को मिलती है।

कुमाउँनी अपनी मौलिक व्याकरणिक एवं ध्वनिक विशेषताओं के कारण विख्यात है तथा अपना अस्तित्व बचाये हुये है। इसमें गढ़वाली की कुछ सामान्य प्रवृत्ति भी पाई जाती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) मध्यकाल में ब्रजभाषा के साहित्यिक विकास पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) अपभ्रंश की कारक-व्यवस्था पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) स्वाधीनता-आन्दोलन के दौरान आन्ध्रप्रदेश राज्य में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी की विशेषण-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'भोजपुरी' बोली का परिचय दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) भाषा के धरातल पर हिन्दी को अपभ्रंश का अवदान बताइए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी के सरलीकरण की प्रक्रिया में पालि, प्राकृत के बाद अपभ्रंश तीसरा चरण है जिसका समय काल 500 ई० से 1000 ई० माना जाता है। संस्कृत से शुरु हुई सरलीकरण की प्रक्रिया यहाँ तीव्र हो गयी थी।

हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का अमूल्य योगदान है। अपभ्रंश के ही दो रूपों शौरसेनी अपभ्रंश, तथा अर्धमागधी अपभ्रंश से क्रमशः ब्रजभाषा एवं अवधी का विकास हुआ।

अपभ्रंश ने हिन्दी भाषा के विकास में शब्दावली, व्याकरणिक एवं ध्वनिक स्तर पर विशेष योगदान दिया है आधुनिक हिन्दी में अपभ्रंश का नींव योगदान है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

व्याकरणिक योगदान

* वर्तमान में नपुंसक लिंग नहीं मिलता सिर्फ स्त्रीलिंग, पुल्लिंग है यह अपभ्रंश का ही योगदान है।
* द्विवचन का लोप हालांकि पाली, प्राकृत के समय से होने लगा था, किन्तु अपभ्रंश ने इसे पूर्ण रूप से हटा दिया
* भूतकाल के "य" रूप, भविष्य का "ग" रूप तथा वर्तमान "त" रूप अपभ्रंश का ही योगदान है।
* कारक व्यवस्था मात्र नहीं अपभ्रंश में तीन कारको का प्रयोग होता है

शब्दावली योगदान

* संस्कृत सरलीकरण प्रक्रिया में संस्कृत

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शब्दों का तत्सम शब्दों में प्रयोग बढ़ा जो आज की हिन्दी भाषा में प्रयुक्त होता है।

* तद्भव, तत्सम, देशज शब्दों का भरमार प्रयोग अपभ्रंश से शुरू हुआ था जो वर्तमान शब्दावली के निर्माण में मुख्य [योगदान] करता है।

ध्वनि विशेषताओं योगदान

* ऐ, औ शब्दों का प्रयोग अर्थात् अकारान्त भाषा अपभ्रंश की देन है।
* मध्य स्वर का लोप होना भी अपभ्रंश की देन है कान्यों, कैसे
* परसर्गों का स्वतंत्र का विकास अपभ्रंश में हुआ।
* अपभ्रंश से बड़ला भाषा की तथा न के स्थान पर "ण" का

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

प्रचलन हिन्दी में शुरू हुआ था।

④ स्त्रीलिंग सर्वनाम स्वरांत होती है अपभ्रंश की देन है

⑤ एकवचन से बहुवचन के लिये इ, रन का प्रयोग वर्तमान में भी होता है

अतः यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि वर्तमान हिन्दी भाषा में अपभ्रंश का महत्वपूर्ण, एवं अविस्मणीय योगदान रहा है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मानक हिंदी की वाक्य-संरचना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

"वाक्य संरचना" वाप: शब्दों के सुव्यवस्थित संरचना को कहते है। जिसमें वाक्य का गठन आदि पर जोर दिया जाता है

हिन्दी में तीन प्रकार की वाक्य संरचना मिलती है

सरल वाक्य - सरल वाक्यों में साधारण शब्दों का प्रयोग किया जाता है ये आकार में छोटे एवं सरल होते है

जैसे - "राम ने रावण को मारा"
"मैंने खाना खाया"
"तुम कब सोओगे"

संयुक्त वाक्य - संयुक्त वाक्य में दो वाक्य आपस में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मिल जाते है तथा संयुक्त वाक्य का निर्माण करते है जैसे-

"यदि अच्छे से नही पढ़ोगे तो फेल हो जाओगे"

"राम का भाई मेरा अच्छा दोस्त है"

मिश्रित वाक्य - इस प्रकार के वाक्य में एक प्रमुख या प्रधान वाक्य होता है तथा अन्य उसी से संबंधित होते हैं। प्रधान वाक्य से स्वतंत्र नहीं हो सकते हैं

जैसे- "मैं आपसे मिलना तो चाहता था किन्तु बीमार पड़ गया और मिलने ना आ सका"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इस प्रकार हिन्दी में मुख्यत: तीन प्रकार के वाक्य पाये जाते है इनको आगे विस्तार दे तो ये 8 प्रकार के हो जाते है। अतः हिन्दी की वाक्य संरचना सरल है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) निर्माण और स्रोत की दृष्टि से हिन्दी शब्द के प्रकारों पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हम आज जो हिन्दी शब्दों को जानते, पढ़ते या बोलते है वो शताब्दियों के निर्माण एवं विभिन्न स्रोतों के द्वारा निर्मित हुआ है।

निर्माण की दृष्टि से तीन प्रकार है

रूढ़ शब्द - रूढ़ शब्द सामान्य होते हैं जो आम बोलचाल में प्रयुक्त होते है जिनका पृथक शब्द नहीं होता।
जैसे- जल, पानी, खाना आदि।

यौगिक शब्द - ऐसे शब्द जो ~~दो श~~ जिन्हें अलग करने पर उनका अर्थ बदल जाये
जैसे- पंकज, जलज आदि।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

योगरूढ़ शब्द - इन शब्दों को एक साथ ही प्रयोग किया जा सकता है अलग करने पर ये मूल शब्द से भिन्न अर्थ देने लगते है जैसे- रेलगाड़ी, जलपान आदि।

स्रोत की दृष्टि से देखे तो 4 प्रकार के शब्दों को देखा जा सकता है।

तत्सम - संस्कृत शब्दों से संबंधित होते है। संस्कृत शब्द को बदलकर प्रयोग किया जाता है
जैसे- हस्त, दुग्ध, रात्रि आदि।

तद्भव - सरलीकरण प्रक्रिया द्वारा निर्मित शब्द होते है जो संस्कृत से सरलीकृत होके बने होते है।

देशज - अपनी स्थानीयता को धारण करने वाले शब्द होते है जो

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

पूर्णतः अपने ही देश में प्रचलित होते है अन्य देशों में प्रयुक्त नही होते है।
जैसे - माता, पिता, पुत्र, पुत्री आदि।

विदेशज - विदेशी भाषा से लिये गये शब्दों को विदेशज शब्द कहते है जैसे-
फारसी- रुमाल, खूबसूरत, हकीकत
अंग्रेजी- डॉक्टर, कम्प्यूटर

हिन्दी के शब्द भण्डार की रचना शताब्दियों के सत्लीकरण सांस्कृतिक आदान- प्रदान का प्रमाण है जिसमें विभिन्न देशों की भाषा का भी योगदान है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

खण्ड - ख

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) शृंगारिकता के धरातल पर रीतिबद्ध एवं रीतिमुक्त कविता का अंतर

रीतिबद्ध काव्यधारा लक्षण ग्रंथ परम्परा से जुडी थी। जिसमें संस्कृत के ग्रंथो को आसान भाषा में उपलब्ध कराया जाता था अनुवाद द्वारा। ये कवि राजकीय संरक्षण में रचनाएं करते है परिणाम स्वरूप इनमें शृंगारिकता के प्रति मोह था। ये राजकीय सम्मान के लिए रचना करते थे तथा शृंगार के प्रति प्रतिबद्ध रहते है जैसे भूषण, पद्माकर आदि।

वही रीतिमुक्त कवि राजकीय संरक्षण से मुक्त होकर प्रेम की संवेदना के लिए शृंगार का प्रयोग करते थे जैसे- घनानन्द आदि।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(*) रीतिबद्ध कवियों में देहमूलक, भोगमूलक श्रृंगार का प्रयोग मिलता है।

(*) रीतिमुक्त श्रृंगार को आध्यात्मिक एवं भावनात्मकता से ~~जुड़~~ जोड़ते थे।

जैसे- "मेरी रूप अगाधे राधे, राधे, राधे, राधे तेरी मिलवे को ब्रजमोहन बहुत जतन है साधे"

(*) रीतिबद्ध राजकीय सभा में चमक दमक वाले श्रृंगार का प्रयोग करते थे।

(*) रीतिमुक्त प्रेम में भाकर, संवेदनात्मक श्रृंगार व वियोग, संयोग पक्ष पर लिखते थे।

अतः रीतिबद्ध जहाँ केवल संयोग पक्ष के कवि थे वहीं रीतिमुक्त संयोग, वियोग के आध्यात्मिक श्रृंगार के कवि थे।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हालावाद

उत्तर छायावाद के समय में विकसित हुई धारा है जिसका संबंध "मदिरा" के काव्य से है। भारत में इसके जनक हरिवंश राय ~~बच्चन~~ बच्चन थे। जिनकी रचना "मधुशाला" हालावाद का प्रतिनिधित्व करती है।

हालावाद की निम्न विशेषताएं होती हैं

(*) मदिरा के सभी पक्षों पर जोर दिया जाता है सकारात्मक पक्षों का अधिक महत्व होता है।

(*) सामाजिक जीवन में मदिरा को महत्वपूर्ण मानते हुये प्रायः समतामूलक समाज के निर्माण में उपयोगी माना है जैसे- "हिन्दू हो, मुस्लिम हो एक है मगर उनका प्याला"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

बैर कराते मंदिर मस्जिद
मेल कराती मधुशाला"

* हालांकि आलोचकों ने हालावाद को पलायनवाद से जोड़कर इसे ~~खारिज~~ खारिज किया है।

* बच्चन जी ने "मधुशाला" में हालावाद के सभी पक्षों को खूबसूरती से उभारा है।

अतः हालावाद अल्प समय के लिए साहित्यिक आन्दोलन था जो अपनी छाप न छोड़ते हुए भी आज भी अपना अस्तित्व बनाये हुए है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'कविवचन सुधा' पत्रिका

"कविवचन सुधा" नामक पत्रिका भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा संपादित होने वाली महत्वपूर्ण पत्रिका है जिसने 19वीं शताब्दी में हिन्दी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भारतेन्दु जी भाषायी द्वैत के समय के कवि हैं जब पद्य के लिए ब्रजभाषा एवं गद्य के लिए खड़ीबोली का प्रयोग होता है।

* कविवचन सुधा पत्रिका ने खड़ीबोली के विकास एवं भाषायी द्वैत को समाप्त करने में महत्वपूर्ण कार्य किया है।

* साथ ही जनता को जागरूक करने, शिक्षित करने एवं हिन्दी के साहित्य को प्रचारित एवं प्रसारित किया है।

* कविवचन सुधा पत्रिका हरिश्चन्द्र जी द्वारा विभिन्न पक्षों को उभारने

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नवजागरण चेतना का प्रसार करने, राष्ट्रवाद को जगाने आदि के लिये भी प्रयोग हुई है।

अतः हिन्दी साहित्य, खड़ीबोली, एवं नवजागरण चेतना के विकास में कविवचन सुधा का योगदान अविस्मरणीय है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) हिन्दी कहानी के विकास में चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' का योगदान

चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी': प्रेमचंद पूर्व युग के प्रसिद्ध कहानीकार हैं। तथा इनकी कहानी "उसने कहा था" अपने समय की महान उपलब्धि है। जिसमें पूर्वदीप्ति का प्रयोग किया गया था।

गुलेरी जी ने नयी कहानी आन्दोलन के लिये पृष्ठभूमि तैयार की पूर्वदीप्ति का प्रयोग आगे नयी कहानी आन्दोलन में किया गया।

- प्रेमचन्द पूर्व युग में कहानी आध्यात्मपरक तथा रोमांचपरक होती है इनकी कहानी में यथार्थ की थोड़ी झलक दिखती है
- गुलेरी जी ने अपनी कहानी में नये प्रयोग किये हैं जो आगे

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

के लिये उदाहरण बन गये हैं।

• पूर्वदीप्ति इनका सबसे चर्चित एवं विख्यात प्रयोग रहा।

• इन्होंने कहानी की प्रगति को बचाये रखे तथा नये आयाम दिये।

अतः "गुलेरी" जी ने कहानी में उद्देश्यपरक कहानी भी लिखी है तथा जनता को जागरूक करने का प्रयास किये गया है साथ ही उनकी पूर्वदीप्ति कला का नयी कहानी में बहुत प्रयोग हुआ है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) सिद्ध साहित्य की प्रवृत्तियाँ

सिद्ध सम्प्रदाय का संबंध बौद्ध धर्म से माना जाता है। सिद्धों ने अपनी मान्यता का प्रचार करने के लिये जो साहित्य रचा उसे सिद्ध साहित्य कहा जाता है। सिद्धों की संख्या 84 मानी गयी है।

(क) सिद्धों की साधना पद्धति पंचमकार पद्धति कहलाती है जिसमें मदिरा, मैथुन आदि का जिक्र एवं त्याग किया जाता है।

(ख) सिद्धों ने अपने साहित्य में खड़ीबोली का भी प्रचुर प्रयोग किया है

"घर को बढ़ती धंधा जाओ"

न के स्थान पर ण का प्रयोग खड़ी बोली को दर्शाता है

(ग) सिद्धों ने धार्मिक आडम्बरों, जातिवाद का विरोध कर समतामूलक समाज

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को पृष्ठभूमि तैयार की।

① उसके साहित्य में गुरु को अत्यधिक महत्व दिया गया है

② शिल्प के स्तर पर सिद्ध साहित्य थोड़ा कमजोर रहता है उसके द्वारा प्रयुक्त संधा भाषा जन सामान्य को साहित्य से दूर करती है

सिद्ध साहित्य शिल्प की कमजोरी के बावजूद महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे प्रभावित होकर आगे निर्गुण काव्यधारा का विकास हुआ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) प्रेमचन्द की कहानियों के रचना-शिल्प पर प्रकाश डालिये। 20

हिन्दी कहानियों में प्रेमचंद का आगमन एक युग का आगमन है प्रेमचन्द ने 20 वर्ष में 300 से ज्यादा कहानी लिखी तथा 20 वर्ष के कहानी काल में हिन्दी कहानी को पूर्ण यथार्थ के स्तर पर पहुँचा दिया अन्यथा जहाँ पहुँचने में 100 साल लग जाते हैं।

प्रेमचन्द ने अपने पूर्ववर्ती कहानियों के रचना एवं संवेदना शिल्प दोनों को बदला है। संवेदना के स्तर पर प्रेमचन्द किसान, एवं दलित वर्ग को अपनी कहानी का मुख्य आधार बनाते हैं

शिल्प रचना के स्तर पर प्रेमचंद की कहानी कला को निम्न प्रकार से पर्यांकित किया जा सकता है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कथानक - प्रेमचंद कथानक स्तर पर सुदृढ़ता प्रदान करते हैं इनकी रुक्मणी? कहानी सरल कथानक के साथ चलती हुई समस्या, समाधान तक पहुँचती है। अलग्योझा इनकी जटिल कथानक पर आधारित कहानी है। कथानक आदर्शोन्मुख यथार्थवाद से प्रेरित रहता है।

भाषा - प्रेमचंद न तो राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द की कालातीत्व भाषा को लेकर चले न ही लक्ष्मणसिंह जी की संस्कृत निष्ठ भाषा को, प्रेमचन्द ने उर्दू, हिन्दी मिश्रित हिन्दुस्तानी को अपनी भाषा बनाया है जो गांधी जी के सपनों की राष्ट्रभाषा है।

कथानक के अनुरूप भाषा-चयन इनकी मुख्य विशेषता है - रानी सारन्धा - तत्समीपन, ईदगाह - शतरंज के खिलाड़ी - फारसीपन दिखता है।

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

मनोविज्ञान - का सुन्दर प्रयोग प्रेमचन्द अपनी कहानी में करते हैं किन्तु यह मनोविज्ञान जैनेन्द्र एवं अज्ञेय से भिन्न है यह जीवन की सूक्ष्म समझ से आया है।

"आनंदी स्त्रियों के स्वभावानुसार रोने लगी"

हास्य-व्यंग्य - का प्रयोग प्रेमचंद की रचना शिल्प की मुख्य विशेषता है।

"उसका रोना भी निराला था जैसे छोटे लड़के के रुदन की आवाज"

विषय वैविध्य - प्रेमचंद की कहानी में पर्याप्त विषय वैविध्य दिखता है

जैसे - बूढ़ी काकी - वृद्धों की समस्या

अलग्योझा - संयुक्त परिवार टूटना

ईदगाह - अभाव ग्रस्त बच्चों की समस्या

नया विवाह - बेमेल विवाह समस्या

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

सूत्रशैली का प्रयोग प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में किया है छोटे वाक्यों में गहरी बात कहने के लिये बलात्मक प्रयोग होता है।

"सुन्दर बच्चों को कदापि माता-पिता भी अधिक प्रेम करते हैं।"

अतः प्रेमचंद की शिल्प रचना कहानी के विकास में प्रमुख रही है प्रेमचंद की कहानियों ने ही नयी कहानियों का आधार भी तैयार किया है जैसे- शिला कहानी में कथानक का छूटना आदि। स्वाभाविक चरित्र योजना उनकी कहानी को और अधिक उपयुक्त बनाती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी के समकालीन यात्रा-वृत्तांत पर प्रकाश डालिए। 15

यात्रा वृत्तांत को प्रायः यात्रा के दौरान के अनुभव एवं वातावरण को शब्दों में अभिव्यक्त करने की विधा होती है। राहुल सांकृत्यायन प्रमुख यात्रा वृत्तांत कर्ता है।

समकालीन समय में लेखकों एवं आम जनता में यात्रा की प्रवृत्ति बढ़ी है परिणाम स्वरूप यात्रा का वृत्तांत भी बढ़ा है। तथा समकालीन परिवेश में यथार्थ अंकन को अधिक महत्वपूर्ण महत्व दिया है। डिजिटल युग के बढ़ जाने में डिजिटल माध्यमों से भी यात्रा वृत्तांत बढ़ा जिसे प्रायः इंग्लिश में ब्लॉग एवं हिंदी में चिट्ठा कार्य कहा जाता है तथा वर्तमान में

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कई युवा इस क्षेत्र में काम कर रहे हैं।

यात्रा वृतांत से सांस्कृतिक जुड़ाव भी बढ़ता है क्योंकि व्यक्ति अपने ही देश एवं विदेश की संस्कृति को जान पाते हैं इसी क्रम में ० साहित्य को बढ़ावा मिलता है।

नागार्जुन जैसे कवियों ने भी कविताओं के माध्यम से यात्रा वृतांत की झलक दी है तथा भिक्षुओं का वर्णन करते हुए यथार्थ यात्रा वृतांत दिखाया है।

"अमल धवल गिरी के शिखरों पर बादल को घिरते देखा है"

वर्तमान समय

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

यात्रा वृतांत सिर्फ पाठ्य विधा न रहकर दृश्य विधा के रूप में प्रयोग होने लगी है तथा दृश्य विधा के इस स्वरूप को अधिक महत्व एवं पसंद किया जाता है किन्तु पाठ्य यात्रा वृतांत की अपनी सुदीर्घ परम्परा रही है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिंदी कहानी के विकास में कृष्णा सोबती के महत्त्व को रेखांकित कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृष्णा सोबती हिन्दी की सशक्त हस्ताक्षर है जिन्होंने अपनी कहानी में नारी मन की सूक्ष्मताओं का सुन्दर अंकन किया है। मित्रो मरजानी जैसे कहानी नारी की अंतर्मन की खोज की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

कृष्णा सोबती की कहानियों को प्रायः तीन वर्गों में बाँटकर देखा जाता है

① **स्त्री पुरुष प्रेम संबंधी कहानी** - इनमें ये स्त्री तथा पुरुषों के प्रेम संबंध का व्यावहारिक स्तर पर अंकन करती है तथा दोनों के स्वाभाविक चरित्र के अनुसार कहानी रचती है जैसे-

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

बादलों के घेरे कहानी महत्वपूर्ण है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

स्त्री-पुरुष द्वंद्वात्मक संबंध - कृष्णा सोबती नयी कहानी दौर की रचनाकार है इसलिए इनके कहानी पात्रों में द्वंद्व होना आम बात है सोबती जी स्वाभाविक एवं व्यावहारिक वर्णन करती है एवं प्रेम संबंधों को व्यावहारिक दर्शाती है जैसे - मित्रो मरजानी जैसी कहानी स्त्री के अन्तर्जगत को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।

विभाजन और त्रासदी - सोबती जी ने सिर्फ स्त्री-पुरुष संबंधों पर ही लेखनी नहीं चलाई वरन इन्होंने विभाजन की त्रासदी पर भी कहानी लिखी है तथा साम्प्रदायिकता को विभाजन का आधार बताया है इस दृष्टि भी सोबती जी अति महत्वपूर्ण कहानीकार है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

भाषा के स्तर पर पंजाबी मिश्रित खड़ीबोली इनकी कहानी की मूल विशेषता है।

इन्होंने अपनी कहानियों में पूर्वदीप्ति, प्रतीकात्मक भाषा आदि का भी सुन्दर प्रयोग किया है।

हिन्दी कहानी परम्परा में कृष्णा सोबती स्त्री विमर्श की मजबूत रचनाकार है तथा हिन्दी कहानी में इनका योगदान विस्मरणीय है। इनका स्त्री विमर्श में महत्वपूर्ण कथन है- "संवेदना कितनी भी तीव्र एवं व्यापक क्यों न हो स्वयंवेदना के बराबर नहीं हो सकती है।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'छायावाद पलायन का काव्य है।' इस मत पर विचार कीजिये। 20

छायावाद स्वच्छंदतावाद का ही विकसित रूप है जो 1918-1936 तक रहा जिसपर रूसो, कार्लाइल, तथा वर्ड्सवर्थ जैसे विचारकों का योगदान रहा। छायावाद के प्रतिनिधि कवि जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पंत, महादेवी वर्मा, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला है।

छायावादी कवि भावनाओं की खुली अभिव्यक्ति करते है जिसे समाज स्वीकार नहीं करता है। महादेवी के शब्दों में कहे- आज का कवि अपने हर सांस का इतिहास कह देना चाहता है। सामाजिक दबाव के कारण ये कवि खुली अभिव्यक्ति नहीं कर पाते है तो इस पर पलायन वाद का

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

आरोप लगता है।

पलायनवाद की मुख्य झलक महादेवी वर्मा के काव्य में दिखती है जहाँ वे कहती है-

"प्रिय मुरली में खो गया है
अब दूत को किस देश भेजूं"

समाज खुली अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं देता है इसलिए ये कवि एकान्त में जाके रहना चाहते है जैसे महादेवी जी कहती है।

"ले चल मुझे भुलावा देकर
मेरे नाविक धीरे-धीरे-धीरे"

निराला की सरोज स्मृति दुख की झांकी है जिसमें निराला का पलायनवादी रूप नजर आता है-

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

"दुख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूँ आज जो नहीं कही"

राम की शक्ति पूजा में धिक्कार का भाव आता जो आत्मग्लानी तक पहुंचता है

"धिक जीवन जो पाता ही आया विरोध
धिक जीवन जिसके लिये सदा किया शोध"

किन्तु छायावाद को पलायनवाद का काव्य कहना उचित नहीं है छायावाद पर सिर्फ पलायनवाद का पक्ष दिखता है सम्पूर्ण छायावाद नहीं।

छायावाद प्रेम के भावनात्मक एवं आध्यात्मिक स्वरूप का काव्य है जिसमें प्रेम के लिये मानव ही नहीं प्रकृति भी उपस्थित है जैसे-

"उतर रही सन्ध्या सुंदरी परी सी
धीरे-धीरे धीरे"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

साथ शक्तिकाव्य के रूप में राष्ट्र की शक्ति पूजा काव्य है जो प्रतीकात्मक वर्ग में अपने समय के स्वाधीनता आन्दोलन से जुड़ता है

• आराधन का दृढ़ आराधन से दो उत्तर
तुम करो विजय संयत प्राणों से प्राणों पर।

अतः यह कह सकते है पलायनवाद छायावाद की एक पक्ष मात्र है एकमात्र पक्ष नहीं है। संवेदनात्मक स्तर पर छायावाद भावनाओं का काव्य है जो हिन्दी साहित्य में अमूल्य योगदानकर्ता रहा है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी निबंध के विकास में आचार्य रामचंद्र शुक्ल के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

आचार्य रामचंद्र शुक्ल हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन के साथ ही "हिन्दी निबंध" के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है तथा शुक्ल जी ने निबंध को गद्य की कसौटी माना है

शुक्ल जी ने निबंध के विकास के लिए स्वयं कई निबंधों की रचना की है जैसे श्रद्धा और भक्ति, कविता क्या है।

• सामाजिक जागरूकता एवं उद्देश्य के लिए शुक्ल जी निबंध को अधिक महत्व देते है इनका मानना है व्यक्ति अपनी वैचारिकता एवं सोच को निबंध के माध्यम से ही व्यक्त कर सकता है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

इन्होंने निबंध को सामाजिक परिवर्तन हेतु भी निबंध जरूरी माना है।

शुक्ल जी ने निबंधों के स्तर पर बड़ी योगदान दिया जो कहानी एवं उपन्यास में प्रेमचंद ने दिया है उन्होंने भी निबंध को लोकप्रिय ग्रहण किया है जिस प्रकार प्रेमचंद ने कहा है केवल मनोरंजन के लिये रची गई रचना दो कौड़ी की होती है।

निबंधों के विषय वैविध्य एवं निबंधों के महत्व को रेखांकित करते हुए हिंदी साहित्येतिहास में भी शुक्ल जी ने निबंध को अधिक महत्व दिया है।

शुक्ल जी के प्रयासों से

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

हिन्दी में निबंध परम्परा का विकास हुआ तथा इन्होंने निबंधों को परिष्कृत के स्तर पर पहुँचाया। तथा निबंध को जन साधारण से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अतः यह कह सकते हैं कि शुक्ल जी ने निबंध विधा को ~~[illegible]~~ उच्च स्तर पर आसीन कराया तथा इसके महत्व को जनसाधारण से अवगत कराया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) स्त्री-विमर्श के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी उपन्यास का अनुशीलन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी उपन्यास की दीर्घ परम्परा रही है जो परीक्षागुरु से शुरू हुई तथा प्रेमचंद, यशपाल एवं जैनेन्द्र के उपन्यास तक फैली थी है जिसे स्वयं स्त्री ने इसे आगे बढ़ाया है।

स्त्री विमर्श का एक पक्ष है जब पुरुष अपनी संवेदना के दम पर स्त्री मन की समस्या की पड़ताल कर रहे थे। जिसमें प्रेमचंद महत्वपूर्ण है जिसमें उन्होंने सेवासदन, गोदान, तथा प्रेमाश्रम में दिखाया है।

यशपाल तथा राहुल जैसे उपन्यासकार मार्क्सवादी विचारधारा से महिला के शोषण को उजागर करते हैं तथा उन्होंने प्रणाली एवं असमानता को इसका कारण मानते है जैसे- झूठा सच, दिव्या जैसे उपन्यास।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इसी में अगली कड़ी जैनेन्द्र जैसे मनोवैज्ञानिक उपन्यासकारों की है जो फ्रायड के मनोविश्लेषणवाद से प्रभावित होकर स्त्री मन की तह में झांकने का प्रयास करते है जैसे- मृणाल, कल्याणी एवं सुनीता जैसे उपन्यासों में।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्त्री विमर्श का महत्वपूर्ण चरण आता है जब स्वयं स्त्रियाँ आती है तथा भोगे हुए यथार्थ को पूरी मार्मिकता के साथ प्रस्तुत करती हैं इनकी मान्यता है कि उनकी संवेदना कितनी भी तीव्र एवं व्यापक क्यों न हो संवेदना के बराबर नहीं हो सकती।

स्त्री विमर्श में स्त्री उपन्यासकारों में मन्नू भण्डारी, कृष्णा सोबती, शिवानी एवं मैत्रेयी पुष्पा महत्वपूर्ण है जो नारी के मन की आकांक्षा, चंचलता, यौन उन्मुक्तता आदि को यथार्थ के साथ प्रस्तुत

Copyright – Drishti The Vision Foundation

करती है। जैसे मित्रो मरजानी आदि।

स्त्री विमर्श में ही आगे दलित स्त्री विमर्श आता है दलित महिला उपन्यासकारों में दोहरा शोषण देखने को मिलता है। एक उच्च जातियों द्वारा दूसरा स्वयं के समाज में व्याप्त पितृसत्तात्मकता के कारण शोषण।

इस प्रकार कह सकते हैं हिन्दी में महिला विमर्श की लम्बी परम्परा रही है जो पुरुषों से बढ़कर होते स्वयं महिला रचनाकारों तक विस्तृत रही है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

8. (क) प्रगतिवादी कविता की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिये। 20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'चौथा सप्तक' का परिचय दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) रसवादी आलोचक होते हुए भी आचार्य रामचंद्र शुक्ल आधुनिक आलोचक हैं। कैसे? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

रफ कार्य के लिये स्थान

(Space for Rough Work)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

रफ कार्य के लिये स्थान

(Space for Rough Work)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation